भाषा और साक्षरता

बोलना और सुनना

भारत में विद्यालय आधारित समर्थन के माध्यम से शिक्षक शिक्षा

www.TESS-India.edu.in

http://creativecommons.org/licenses/

The Open University

UKaid from the British people

संदेश

शिक्षकों को बाल केंन्द्रित कक्षा अभ्यास की ओर उन्मुख करने तथा शिक्षक प्रशिक्षण की गुणवत्ता को बेहतर बनाने के उद्देश्यों को सम्मुख रखते हुए TESS-India राष्ट्रीय स्तर पर कार्यरत है। इस दिशा में TESS-India द्वारा मुक्त शैक्षिक संसाधन (Open Educational Resources) का विकास किया गया है । ये संसाधन शिक्षकों तथा शिक्षक–प्रशिक्षकों के वृत्ति विकास (Professional development) में लाभकारी एवं उपयोगी सिद्ध होंगे। राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद, बिहार के नेतृत्व में इन संसाधनों का स्थानीयकृत किया गया है, जिसके अन्तर्गत इनके उद्देश्य के मूल को बरकरार रखते हुए इनमें स्थानीय, भाषा, बोली, प्रथाओं, संस्कृतियों तथा नियमों को सम्मिलित किया गया है। इनका उपयोग शिक्षण कार्य में सहजता एवं सुगमता पूर्वक किया जा सकता है ।

राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद, बिहार के मार्गदर्शन में TESS-India द्वारा स्थानीय भाषा में तैयार मुक्त शैक्षिक संसाधन (Open Educational Resources) नेट पर आप सभी के लिए सुलभ उपलब्ध है ।

शुभकामनाओं सहित ।

(डॉ0 मुरली मनोहर सिंह)
निदेशक
एस0सी0ई0आर0टी0, बिहार

समीक्षा एवं दिशाबोध
डॉ. मुरली मनोहर सिंह, निदेशक राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार
डॉ. सैयद अब्दुल मोईन, विभागाध्यक्ष, अध्यापक शिक्षा विभाग, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार
डॉ. क़ासिम खुर्शीद, विभागाध्यक्ष, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्
डॉ. इम्तियाज़ आलम, विभागाध्यक्ष, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार
डॉ. स्नेहाशीष दास राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार
डॉ. अर्चना, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार
डॉ. रीता राय, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार
श्री तेज नारायण प्रसाद, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार

स्थानीयकरण
भाषा और शिक्षा
डॉ. ज्ञानदेव मणि त्रिपाठी, प्राचार्य, मैत्रेय कॉलेज ऑफ एडुकेशन एण्ड मैनेजमेंट, हाजीपुर, वैशाली
श्री सुमन सिंह, प्रखंड साधनसेवी, भगवानपुर हाट, सिवान
श्री कात्यायान कुमार त्रिपाठी, प्राथमिक विद्यालय चैलीटाल, पटना
श्री कृत प्रसाद, प्रखंड साधनसेवी, हिलसा, नालंदा
प्राथमिक अंग्रेज़ी
श्री अरशद रज़ा, सहायक शिक्षक, प्राथमिक विद्यालय, पचासा रहुई, नालंदा
श्री संतोष सुमन, सहायक शिक्षक, बालिका उच्च विद्यालय, महुआबाग
श्री शशि भूषण पाण्डेय, सहायक शिक्षक, उत्क्रमित मध्य विद्यालय, मुकुन्दपुर, नालंदा
श्रीमती रचना त्रिवेदी, शिक्षिका, नोट्रेडेम अकादमी, पटना
माध्यमिक अंग्रेज़ी
श्री मणिशंकर, प्रधानाध्यापक, तारामणी भगवानसाव उच्च माध्यमिक विद्यालय, कोइलवर, भोजपुर
डॉ. ब्रजेश कुमार, शिक्षक, पी. एन. एंग्लो संस्कृत माध्यमिक विद्यालय, नया टोला, पटना
प्राथमिक गणित
श्री कृष्ण कान्त ठाकुर
श्री दिलीप कुमार, संकुल संसाधन केन्द्र समन्वयक, बुलनी हैदरपुर, नालंदा
श्री गोविन्द प्रसाद, प्रखंड साधनसेवी, चनपटिया, पश्चिमी चम्पारण
माध्यमिक गणित
डॉ. राकेश कुमार, भागलपुर डायट
श्री रिज़वान रिज़वी, उत्क्रमित मध्य विद्यालय, सिलौटा चाँद, कैमूर
श्री इन्द्रभूषण कुमार, शिक्षक, सहयोगी माध्यमिक विद्यालय, हाजीपुर, वैशाली
प्राथमिक विज्ञान
श्री मनोज त्रिपाठी, प्रखंड साधनसेवी, बरहारा, भोजपुर
श्री शशिकान्त शर्मा, प्रखंड साधनसेवी, आरा, भोजपुर
श्री रणबीर सिंह, संकुल संसाधन केन्द्र समन्वयक, आदर्श आवासीय मध्य विद्यालय शिक्षक संघ, सहरसा
माध्यमिक विज्ञान
श्री जी.वी.एस.आर प्रसाद
श्री मुकुल कुमार, शिक्षक, सहायक शिक्षक, गोरखनाथ सूर्यदेव माध्यमिक विद्यालय, राजापाकर वैशाली

TESS-India (Teacher Education Through School Based Support) का लक्ष्य है भारत में मुक्त शैक्षिक संसाधनों के द्वारा प्राथमिक और माध्यमिक स्तरों पर शिक्षकों के कक्षा अभ्यासों को बेहतर करना। ये संसाधन शिक्षकों के छात्र–केन्द्रित, भागीदारी दृष्टिकोण को विकसित करने में सहायता करेंगे।

TESS-India के मुक्त शैक्षिक संसाधन (Open Education Resources – OERs) शिक्षकों को स्कूल की पाठ्यपुस्तक के लिए सहायक पुस्तिका प्रदान करते हैं। ये संसाधन शिक्षकों के लिए गतिविधियाँ प्रदान करते हैं जो वे कक्षा में अपने छात्रों के साथ कर सकते हैं। साथ ही इनमें केस स्टडी भी हैं जो ये दर्शाते हैं कि किस प्रकार दूसरे शिक्षकों ने उस विषय को सिखाया है। संबंधित संसाधन शिक्षकों को पाठ योजना बनाने में और विषय पर ज्ञान वर्धन करने में उनकी सहायता करते हैं।

TESS-India के मुक्त शैक्षिक संसाधन भारतीय पाठ्यक्रम और संदर्भों के अनुकूल हैं। ये *भारतीय तथा अतंर्राष्ट्रीय लेखकों के सहयोग से तैयार* किये गये हैं *और ये ऑनलाइन तथा प्रिंट उपयोग के लिए उपलब्ध है (http://www.tess-india.edu.in)* । मुक्त शैक्षिक संसाधन अनेकों संस्करणों में उपलब्ध हैं जो प्रत्येक राज्य के लिए उपयुक्त है जहाँ TESS India कार्यरत है। उपयोगकर्ता इन संसाधनों को अनुकूल और स्थानीयकृत करने के लिए स्वतंत्र हैं ताकि ये स्थानीय आवश्यकताओं और संदर्भों को पूरा कर सकें।

TESS-India मुक्त विश्वविद्यालय, ब्रिटेन के नेतृत्व में तथा ब्रिटेन की सरकार द्वारा वित्त-पोषित है।

वीडियो संसाधन

इस इकाई की कुछ गतिविधियों के साथ निम्न प्रतीक का उपयोग किया गया है: *. इससे संकेत मिलता है कि निर्दिष्ट अध्यापन संबंधी थीम के लिए TESS-India वीडियो संसाधनों को देखना आपके लिए उपयोगी होगा।*

TESS-India वीडियो संसाधन भारत में अनेक प्रकार की कक्षाओं के संदर्भ में मुख्य अध्यापन तकनीकों का वर्णन करते हैं। हमें आशा है कि वे आपको इसी प्रकार के अभ्यासों के साथ प्रयोग करने के लिए प्रेरित करेंगे। उनका उद्देश्य पाठ (टेक्स्ट) पर आधारित इकाइयों के माध्यम से काम करने के आपके अनुभव का पूरक होना और उसे बढ़ाना है।

TESS-India वीडियो संसाधनों को ऑनलाइन देखा या TESS-India की वेबसाइट, http://www.tess-india.edu.in/ से डाउनलोड किया जा सकता है। वैकल्पिक रूप से, आप ये वीडियो सीडी या मेमोरी कार्ड के माध्यम से भी देख सकते हैं।

संस्करण2.0 LL03v1
Bihar

तृतीय पक्षों की सामग्रियों और अन्यथा कथित को छोड़कर, यह सामग्री क्रिएटिव कॉमन्स एट्रिब्यूशन-शेयरएलाइक लाइसेंस के अंतर्गत उपलब्ध कराई गई है.
http://creativecommons.org/licenses/by-sa/3.0/

TESS-India is led by The Open University UK and funded by UK aid from the UK government

यह इकाई किस बारे में है

यह इकाई इस बारे में है कि बोलने और सुनने के सार्थक अवसर वर्गकक्ष में सीखने और सिखाने में किस प्रकार प्रभावी योगदान करते हैं।

अपने छात्र–छात्राओं के बोलने और सुनने के कौशल के विकास के लिए आप विभिन्न गतिविधियों की योजना बनाएँगे और उनका मूल्यांकन करेंगे। आप उन तरीकों पर भी विचार करेंगे, जिनके द्वारा अपने छात्र–छात्राओं के विचार सुनकर आपको उनके सीखने का आकलन करने और अपने भावी सीखने की योजना बनाने में मदद मिल सकती है।

आप इस इकाई में सीख सकते हैं

- कक्षा में छात्र–छात्राओं द्वारा वर्गकक्ष में सार्थक बातचीत का महत्व।
- चित्रों का उपयोग बोलने और सुनने की गतिविधियों के आधार के रूप में किस प्रकार करें।
- किस प्रकार छात्र–छात्राओं की बातचीत का उपयोग उनकी समझ और प्रगति के मूल्यांकन के एक साधन के रूप में करें, ताकि उसके अनुसार अपनी अध्यापन योजनाओं में बदलाव कर सकें।

यह दृष्टिकोण क्यों महत्वपूर्ण है

सभी पाठ्यचर्या में बोलना और सुनना सीखने–सिखाने के केन्द्र में होते हैं। बोलना साक्षरता का आधार भी है। छोटे बच्चे पढ़ना और लिखना शुरू करने से बहुत पहले ही सुनने और बोलने लगते हैं। वे सीखते हैं कि बोलकर वे अपनी ज़रूरतों और इच्छाओं को व्यक्त कर सकते हैं, वस्तुओं के बारे में जान सकते हैं, और कल्पनाशील, अन्वेषक खेल में शामिल हो सकते हैं। बच्चों को यह अवसर चाहिए होता है कि उनकी बात सुनी जाए और उन्हें विभिन्न सन्दर्भों में अलग–अलग विषयों के बारे में बोलने का मौका दिया जाए, ताकि उनका भाषा कौशल विकसित हो सके, जिससे उनकी विद्यालयी उपलब्धियों में भी वृद्धि होगी।

1 बोलना और सीखना

पारंपरिक कक्षाओं में, अक्सर शिक्षक ही ज्यादातर समय बोलते हैं। हालांकि सीखने के प्रति छात्र–छात्राओं के दृष्टिकोण – सीखने के उनके लाभ के साथ – में तब उल्लेखनीय रूप से सुधार होता है, जब वे अपनी खुद की बातचीत के द्वारा, सीखने की प्रक्रिया में सक्रिय रूप से शामिल होते हैं।

ज़रा सोचिए

- आपके अनुसार सीखने की प्रक्रिया में छात्र–छात्राओं के 'सक्रिय रूप से शामिल' होने का क्या अर्थ है? क्या यह सिर्फ शिक्षक के प्रश्नों का उत्तर देने तक सीमित है या यह उससे कुछ अधिक है?
- आपको कैसे पता चलता है कि आपके छात्र कक्षा में अपने शिक्षण में 'सक्रिय रूप से शामिल' हैं या नहीं?

सीखने में व्यक्ति के मौजूदा ज्ञान, कौशल और अनुभवों में वृद्धि करना और नए दृष्टिकोण प्राप्त करना शामिल होता है। बातचीत इस प्रक्रिया में मुख्य भूमिका निभाती है, क्योंकि इससे छात्र–छात्राओं को उनके विचारों को स्पष्ट करने, वे क्या नहीं समझ सके हैं, यह बताने, प्रश्न पूछने, नए विचारों को जानने और शिक्षक/शिक्षिकाओं व सहपाठियों के साथ आपसी बातचीत के द्वारा नई बातें सीखने में मदद मिलती है।

इस पहली गतिविधि में, आप सीखने के लिए बातचीत के महत्त्व पर विचार करेंगे।

गतिविधि 1: सीखने के लिए बातचीत

यदि संभव हो, तो यह गतिविधि अपने किसी सहकर्मी के साथ करें।

पहले संसाधन 1, 'सीखने के लिए बातचीत' पढ़ें। जब आप इसे पूरा कर लेते हैं, तब ध्यानपूर्वक निम्नलिखित दो अंश पढ़ें:

- यहां तक कि साक्षरता और गणना के सीमित कौशलों वाले नन्हें छात्र–छात्रा भी उच्चतर श्रेणी के चिंतन कौशलों का प्रदर्शन कर सकते हैं, बशर्ते कि उन्हें दिया जाने वाला कार्य उनके पहले के अनुभव पर आधारित और आनंदप्रद हो। उदाहरण के लिए, छात्र तस्वीरों, आरेखणों या वास्तविक वस्तुओं से किसी कहानी, पशु या आकृति के बारे में पूर्वानुमान लगा सकते हैं। छात्र–छात्रा भूमिका निभाते समय कठपुतली या पात्र की समस्याओं के बारे में सुझावों और संभावित समाधानों को सूचीबद्ध कर सकते हैं।
- जो कुछ आप छात्र–छात्राओं को सिखाना चाहते हैं, उसके इर्दगिर्द सीखने की योजना बनायें और इस बारे में सोचें, और साथ ही इस बारे में भी कि आप किस प्रकार की बातचीत को छात्र–छात्राओं में विकसित होते देखना चाहते हैं।

ज़रा सोचिए

संसाधन 1 बताता है कि छात्र कहानी के बारे में, किसी जानवर के बारे में या आकृति के बारे में फोटो, ड्रॉइंग या वास्तविक वस्तुओं से अनुमान लगा सकते हैं, और छात्र किसी नाटिका में कठपुतली या पात्र की समस्याओं के बारे में सुझाव और संभावित समाधान दे सकते हैं।

- इस बात के एक उदाहरण के बारे में सोचें कि इन विचारों को किस प्रकार कक्षा दो में लागू किया जा सकता है। आप किन संसाधनों, विषयों या गतिविधियों का उपयोग करेंगे?
- इस बात के एक उदाहरण के बारे में सोचें कि इन विचारों को किस प्रकार कक्षा सात में लागू किया जा सकता है। इसके लिए कौन-से संसाधन, विषय या गतिविधियाँ उपयुक्त होंगी?

इन प्रश्नों पर विचार करें: 'इसके बाद क्या होगा?', 'क्या हमने इसे पहले देखा है?', 'यह क्या हो सकता है?' और 'आपके अनुसार वह क्यों है?'

- कक्षा की कुछ गतिविधियों के बारे में सोचें, जिनमें आप कक्षा एक में ये प्रश्न पूछेंगे।
- कक्षा की कुछ गतिविधियों के बारे में सोचें, जिनमें आप कक्षा छः में ये प्रश्न पूछेंगे।

अब अपने हाल के पाठों के बारे में सोचें। क्या आप पहचान सकते हैं कि किस समय आपके छात्र–छात्राओं ने अन्वेषक बातचीत की थी? इस तरह की बातचीत किन विषयों या बातों से संबंधित थी?

सीखने के लिए बातचीत करना सभी आयुवर्गों के छात्र–छात्राओं के लिए मूल्यवान होता है। छात्र–छात्राओं को एक उद्देश्यपूर्ण तरीके में बात करने के जितने ज्यादा मौके दिए जाएंगे, वे विचारपूर्वक बोलने और सुनने में उतने ही अधिक कुशल बनेंगे।

वीडियो: सीखने के लिए बातचीत

2 छात्र–छात्राओं की बातचीत में संकेत के रूप में चित्रों का उपयोग करना

केस स्टडी 1 पढ़ें, जिसमें बताया गया है कि किस प्रकार एक शिक्षिका चित्रों का उपयोग करके अपने छात्र–छात्राओं को प्रोत्साहित करती है कि उन्हें जो बातें मालूम हैं, वे उनके बारे में बताएँ।

केस स्टडी 1: कक्षा में बातचीत को प्रोत्साहित करने के लिए चित्रों का उपयोग करना

सुश्री प्रियंका छपरा के एक ग्रामीण विद्यालय में कक्षा एक की शिक्षिका हैं। यहाँ वे बताती हैं कि किस प्रकार वे कक्षा में बातचीत को आगे बढ़ाने के लिए परिचित दृश्यों वाले चित्रों का उपयोग करती हैं।

मैं अपने छात्र–छात्राओं को बातचीत के लिए प्रोत्साहित करने के लिए चित्रों [चित्र 1 देखें] का उपयोग करती हूँ। स्थानीय कलाकारों द्वारा बनाए गए ये चित्र टिकाऊ कागज़ की बड़ी शीटों पर छापे गए हैं और प्लास्टिक से ढके हुए हैं। पहले चित्र का शीर्षक है 'मेरा गाँव' और दूसरे का शीर्षक है 'कृषि'।

चित्र 1: दो चित्र – 'मेरा गाँव' (बायाँ) और 'कृषि' (दायाँ)
–जिनका उपयोग सुश्री प्रियंका अपने छात्र–छात्राओं को बातचीत के लिए प्रोत्साहित करने के लिए करती हैं।

सबसे पहले मैं दीवार पर चित्र लगाती हूँ। मैं उनका चर्चा नहीं करती और अपने छात्र–छात्राओं को उनके समय में इन पर ध्यान देने और इन्हें देखने देती हूँ। अगले एक या दो दिनों तक मैं अपने छात्र–छात्राओं को इन चित्रों के बारे में एक-दूसरे से बात करते और इनके विवरणों के बारे में चर्चा करते हुए सुनती हूँ।

इसके बाद मैं 20-मिनट का एक सत्र आयोजित करके हर दिन छात्र–छात्राओं के एक समूह के साथ दो चित्रों पर चर्चा करती हूँ। कभी-कभी मैं इस काम के लिए समूह को बाहर भी ले जाती हूँ। मैं शेष कक्षा को उस समय चुपचाप करने के लिए कोई और काम देती हूँ।

मैं पहले से ही कई प्रश्नों की सूची बनाकर रखती हूँ। कुछ प्रश्न सरल वर्णनों को प्रकाश में लाने के लिए होते हैं, जबकि अन्य प्रश्न ज्यादा अन्वेषक बातचीत को आगे बढ़ाने के उद्देश्य से, तर्क, अनुमान और बातों को छात्र–छात्राओं के स्वयं के अनुभवों से जोड़ने के रूप में होते हैं। यहाँ प्रत्येक प्रकार के प्रश्नों के कुछ उदाहरण दिए गए हैं।

- यह चित्र किसका है?
- क्या आप बता सकते हैं कि आपको चित्र में क्या दिखाई दे रहा है?
- लोग क्या कर रहे हैं?
- क्या आपने कभी ये खेल खेले हैं? क्या आप बता सकते हैं कि इन्हें कैसे खेला जाता है?

- क्या आपने कभी खेतों में अपने परिवार की मदद की है?
- खेत से मिलने वाला आपका पसंदीदा खाद्य कौन-सा है? वह कैसे बनाया जाता है?
- इस चित्र का कौन-सा भाग आपको सबसे अच्छा लगा? ऐसा क्यों?

मैं छात्र–छात्राओं की बातों में कोई सुधार या टोकाटाकी किए बिना हर छात्र की बात ध्यान से सुनती हूँ। मैं जोर देती हूँ कि बाकी छात्र भी ध्यान से सुनें। मेरे छात्र जो देखते और जानते हैं, उसके बारे में उन्हें बोलने के लिए उन्हें प्रोत्साहित करने से मुझे उनके बारे में बहुत कुछ सीखने को मिलता है। इससे मुझे उनकी क्षमता का आकलन करने और उन्हें आगे सहायता करने और बढ़ाने के तरीकों के बारे में सोचने में मदद मिलती है।

मेरे कुछ छात्र–छात्रा बोलने में शर्माते हैं, लेकिन वे अपने सहपाठियों की बातें अवश्य ध्यान से सुनते हैं। मैं उन्हें सरल प्रश्न पूछने की कोशिश करती हूँ, जिनके जवाब में एक शब्द में या इशारे से या सिर हिलाकर दे सकते हैं, जिससे मुझे पता चले कि वे मेरी बात समझ गए हैं।

मैं हमेशा अपने छात्र–छात्राओं को बोलने और सुनने के अच्छे नमूने देने की कोशिश करती हूँ। मैं स्पष्ट रूप से बात करती हूँ, उत्तर देने वालों के साथ दृष्टि संपर्क बनाती हूँ तथा आगे और प्रश्न पूछती हूँ, जिससे उनके उत्तरों के प्रति मेरी रुचि का संकेत मिलता है।

ज़रा सोचिए

- सुश्री प्रियंका के कौन-से प्रश्न उनके छात्र–छात्राओं को अन्वेषक बातचीत के लिए प्रोत्साहित करते हैं?
- वे किस तरह सुनिश्चित करती हैं कि उनके सभी छात्र इस गतिविधि में शामिल हैं?
- सुश्री प्रियंका के पास वक्ताओं और श्रोताओं के रूप में अपने छात्र–छात्राओं का मूल्यांकन करने के कौन-से अवसर हैं?

आपके छात्र संभवतः विविध सामाजिक, सांस्कृतिक और भाषाई पृष्ठभूमियों वाले होंगे। आपके द्वारा कक्षा में शामिल की जाने वाली बोलने और सुनने की गतिविधियाँ आपके छात्र–छात्राओं द्वारा विद्यालय में लाए जाने वाले विविध तरह के ज्ञान पर आधारित होनी चाहिए। यह विशिष्ट रूप से उन छात्र–छात्राओं के लिए ज्यादा लागू होता है, जिनके घर की भाषा विद्यालय की भाषा से अलग है। इस बात पर ध्यान दें कि किस प्रकार केस स्टडी 1 में उपयोग किए गए चित्र संकेत सुश्री प्रियंका के सभी छात्र–छात्राओं के परिचित दृश्यों वाले थे। इस बात का ध्यान रखें कि जो छात्र चुप रहते हैं, वे भी सुनकर, सोचकर और सीखकर इस गतिविधि में भाग ले रहे होते हैं।

निम्नलिखित गतिविधि में आप अपने छात्र–छात्राओं को बोलने और सुनने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए चित्रों का उपयोग करेंगे।

गतिविधि 2: एक चित्र-आधारित समूह चर्चा

इस गतिविधि के लिए आप अपनी पाठ्यपुस्तक से या अपने विद्यालय अथवा समुदाय के अन्य स्रोतों से कोई भी चित्र ले सकते हैं।

विचारों के लिए केस स्टडी 1 का उपयोग करके, एक सीखने की योजना बनाएँ, जिसमें आप एक चित्र या चित्रों की शृंखला के द्वारा अपने छात्र–छात्राओं को प्रोत्साहित करते हैं कि वे जो देखते या कल्पना करते हैं, उसे अपने ज्ञान और अनुभव से

जोड़कर वे उसके बारे में बताएँ।

पाठ की योजना बनाने से पहले, निम्नलिखित कार्य करें:

- इस बारे में सोचें कि आप इस गतिविधि का व्यवस्थापन कैसे करेंगे। इस पर विचार करें कि क्या इसमें जोड़ियाँ बनाई जाएँगी, छोटे समूह होंगे या पूरी कक्षा एक साथ रहेगी, तथा क्या यह गतिविधि कक्षा के अंदर होगी या बाहर।
- अपने किसी सहकर्मी के साथ मिलकर इस बारे में सोचें कि आप अपने छात्र–छात्राओं से किस तरह के प्रश्न पूछ सकते हैं।

निम्नलिखित प्रश्न चित्र 2 में प्रदर्शित चित्र पर आधारित हैं। आपके द्वारा उपयोग की जाने वाली छवियों और पढ़ाई जाने वाली कक्षा की उम्र के अनुसार आपको अन्य प्रश्न तैयार करने पड़ेंगे:

- वर्णनात्मक प्रश्न:
  - आपके विचार से इस चित्र में क्या हो रहा है?
  - बच्चे क्या कर रहे हैं?
  - इसमें कितनी लडकियां हैं? कितने लड़के हैं? कितने वयस्क हैं?
  - आप कौन-से रंग देख सकते हैं?
- तार्किक प्रश्न:
  - कुछ वयस्कों की ओर संकेत करें और पूछें कि 'आपके अनुसार वे यहाँ क्यों हैं और वे एक-दूसरे से क्या बात कर रहे हैं?'
  - कुछ बच्चों की ओर संकेत करें और पूछें कि 'आपको क्या लगता है कि वे एक-दूसरे से क्या बात कर रहे हैं?'
  - अभी वातावरण या मौसम कैसा है? आपको कैसे पता?
  - आपके अनुसार यह दिन का कौन-सा समय है? क्यों?
  - क्या वह शान्ति है या शोर हो रहा है? आप किस तरह बता सकते हैं?
  - क्या आपको लगता है कि जो लड़का खा रहा है, वह अपनी जगह पर बैठकर उस रस्सी कूदने वाली लड़की को देख सकता है?
  - बच्चे दुखी हैं या खुश हैं? आप किस तरह बता सकते हैं?
  - लड़कियां और लड़के अलग–अलग खेल क्यों खेलते हैं?
  - क्या उस लड़की को अपने कान में वह तेज़ शोर पसंद है?
- अनुमान के प्रश्न:
  - जब लड़का अपनी गुलेल चलाएगा, तो क्या होगा?
  - क्या लड़का उस गेंद को पकड़ लेगा?
  - आपके विचार में आगे क्या होगा?
- चित्र को छात्र–छात्राओं के निजी अनुभवों से जोड़ना:
  - क्या आपकी विद्यालय का परिसर ऐसा दिखता है?
  - क्या आप ये खेल खेलते हैं?
  - आपको कौन-से खेल खेलना पसंद है?
  - यदि आप उस मैदान में होंते तो आप क्या करना पसंद करते?

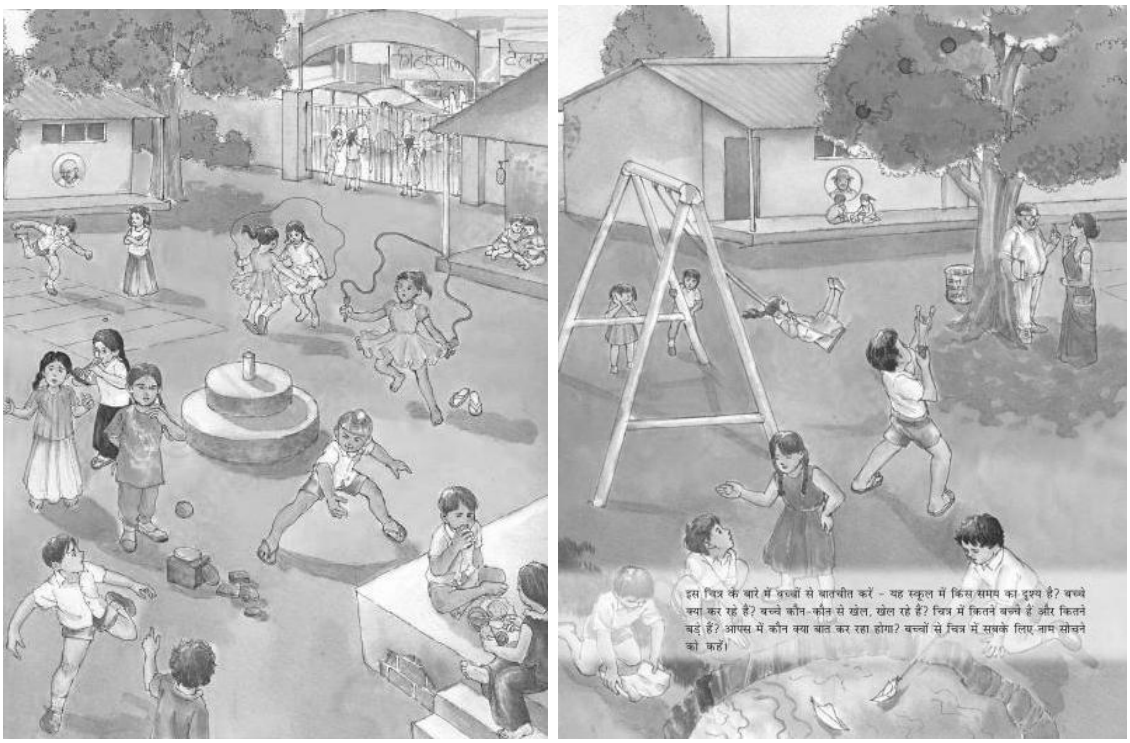

चित्र 2: छात्र–छात्राओं को बात करने के लिए आगे बढ़ाने वाले दो चित्र।

ज़रा सोचिए

अपनी कक्षा के साथ यह गतिविधि पूरी कर लेने के बाद, निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें:

- आपने किस तरह के प्रश्न पूछे?
- अपने छात्र–छात्राओं के उत्तरों की लंबाई और गुणवत्ता के बारे में आपने किस बात पर ध्यान दिया?
- यह गतिविधि करते समय आपके छात्र–छात्रा कौन-से कौशल सीख रहे थे? (उदाहरण के लिए इनमें दूसरों की बात सुनना, प्रश्नों के उत्तर देना, अपने अनुभवों के बारे में बताना या सोचने और तर्क करने के लिए भाषा का उपयोग करना शामिल हो सकते हैं।)
- क्या उनकी कोई बातें उनके पाठ्यक्रम के विषयों जैसे गणित, भूगोल या विज्ञान से संबंधित थीं?

अपनी सीखने की योजनाओं और गतिविधियों में प्रश्नों के उपयोग के बारे में अधिक जानकारी के लिए संसाधन 2, 'सोच बढ़ावा देने के लिए प्रश्नों का उपयोग करना' देखें।

वीडियो: सोच को बढ़ावा देने के लिए प्रश्न पूछना

अगली गतिविधि में आप अपने छात्र–छात्राओं को कहानियाँ बनाने और कक्षा में सुनाने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए चित्रों का उपयोग कर्नेगे।

गतिविधि 3: चित्रों से कहानी

चित्र 3 के चारों चित्र देखें। इन चित्रों से संबंधित एक कहानी बनाएँ। यह आपकी इच्छा के अनुसार छोटी या बड़ा हो सकती है, और इसमें संवाद भी हो सकते हैं।

अपनी कहानी किसी सहकर्मी को सुनाएँ। उन्हें यह कैसी लगी?

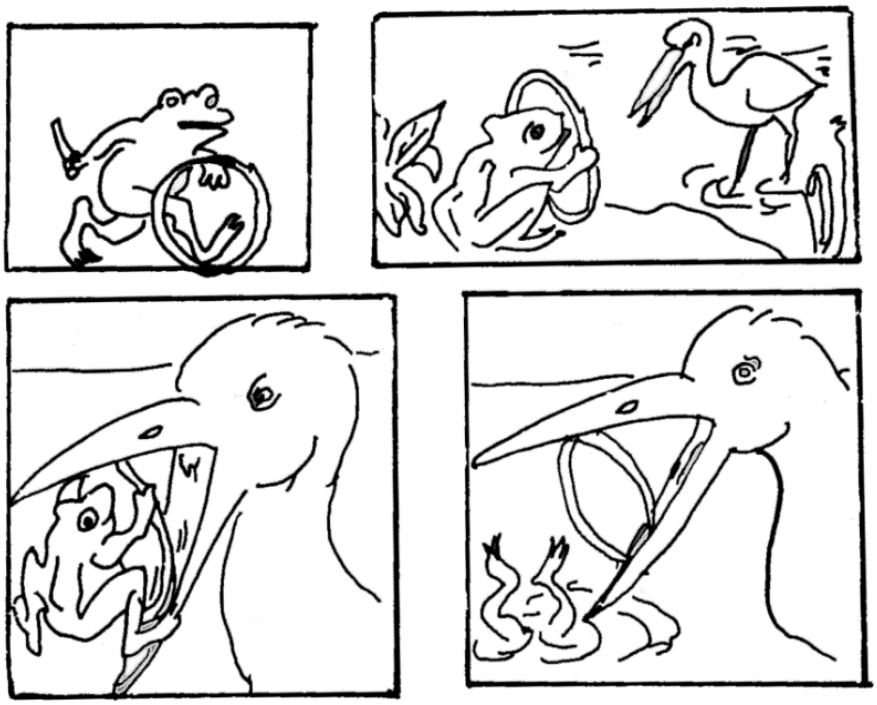

चित्र 3: एक कहानी बनाने के लिए चित्रों का उपयोग करना।

अब अपने छात्र–छात्राओं के साथ एक चित्र-आधारित कहानी सुनाने से संबंधित गतिविधि आज़माएं। इसके लिए आप चित्रों की किसी भी शृंखला का उपयोग कर सकते हैं - किसी पुस्तक से, पत्रिका या अखबार से, अथवा आपके द्वारा, आपके मित्र या सहकर्मी के द्वारा बनाए गए चित्र।

सबसे पहले चित्र 3 में दिए गए चित्र अनुक्रम के बारे में अपनी खुद की लघुकथा सुनाकर इस गतिविधि का अभ्यास करें। इसके बाद अपने छात्र–छात्राओं को जोड़ियों या समूहों में व्यवस्थित करने और उन्हें इन्हीं चित्र संकेतों का उपयोग करके अलग–अलग कहानियाँ तैयार करने को कहें। जिन छात्र–छात्राओं के घर की भाषा एक समान है, उन्हें एक ही जोड़ी या समूह में रखें, ताकि वे उसी भाषा में कहानी सुनाने की तैयारी कर सकें। यदि संभव हो, तो उन्हें अलग–अलग आवाज़ों और हावभाव का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित करें।

जब सब लोग तैयार हो जाएँ, तो अपने छात्र–छात्राओं से उनकी कहानी दूसरी जोड़ी या समूह को, अथवा पूरी कक्षा को सुनाने को कहें। घर की भाषा की कहानियों का अनुवाद किस प्रकार विद्यालय की भाषा में भी किया जा सकता है, इसके तरीकों के बारे में चर्चा के लिए समय दें।

ज़रा सोचिए

- इस गतिविधि से आपके छात्र–छात्राओं को कौन-से भाषा संबंधी अवसर मिले?
- आपने कैसे सुनिश्चित किया कि कक्षा का प्रत्येक छात्र इसमें शामिल हुआ था?
- आप इसे पाठ्यक्रम के किसी विशिष्ट विषय, जैसे इतिहास, के लिए किस प्रकार अनुकूलित कर सकते हैं?

- आप इस तरह की गतिविधि के द्वारा भाषा और विषय के ज्ञान का मूल्यांकन कैसे कर सकते हैं?

3 अपने शिक्षण कार्य में जानकारी पाने के लिए छात्र–छात्राओं की बातचीत का उपयोग करना।

छात्र–छात्रा अक्सर अपने शिक्षण के बारे में बात करते हैं। अब क्रियाकलाप 4 करके देखें।

गतिविधि 4: अपने छात्र–छात्राओं की बातचीत सुनना

एक शिक्षण संसाधन के रूप में छात्र–छात्राओं की बातचीत की संभावना को समझने के लिए, आपके छात्र–छात्राओं की किसी बातचीत को चुपचाप सुनें। यदि संभव हो, तो एक से ज्यादा बार ऐसा करें।

देखें कि क्या आप अपने छात्र–छात्राओं को निम्नलिखित में से कुछ करते हुए सुन सकते हैं:

- किसी बात पर ध्यान देना
- इसके बारे में ध्यान से सोचना
- अपने अवलोकन एक-दूसरे को बताना
- अपने अवलोकनों और अनुभवों को एक सुव्यवस्थित तरीके में रखना
- एक-दूसरे के अवलोकनों और अनुभवों को चुनौती देना
- अवलोकनों और अनुभवोंके आधार पर तर्क देना
- अनुमान लगाना
- किसी पिछले अवलोकन या अनुभव को याद करना
- किसी दूसरे के अनुभव या भावनाओं की कल्पना करना
- अपनी खुद को भावनाओं या अनुभवों को याद करना।

ज़रा सोचिए

- क्या आपने किन्हीं ऐसे छात्र–छात्राओं की बातें सुनीं, जो कुछ सीखने की प्रक्रिया में थे और बातचीत के द्वारा अपने शिक्षण को एकत्रित कर रहे थे?
- आप अपने अध्यापन के संसाधन के रूप में इस तरह की बातचीत का उपयोग कैसे कर सकते हैं?

एक शिक्षक होने के नाते, एक अच्छा श्रोता होना महत्वपूर्ण है। अक्सर आप अपने छात्र–छात्राओं की जिन बातों को सुनते हैं, उनके तत्वों को आप अपने आगे के सीखने की योजनाओं में शामिल कर सकते हैं।

अब केस स्टडी 2 में दो उदाहरण पढ़ें। इन्हें पढ़ते समय इस बारे में सोचें कि शिक्षक जो सुनते हैं, उसका उपयोग में अपने अध्यापन में सहायता के लिए किस प्रकार करते हैं। जब आप इसे पूरा कर लेते हैं, तो अपने छात्र–छात्राओं को सुनने का अगला अवसर ढूंढें। उनकी बातचीत के कौन-से पहलू आपकी आगामी कक्षा गतिविधियों के लिए उपयोगी हो सकते हैं?

केस स्टडी 2: छात्र–छात्राओं की वार्ता से मदद लेना

सुश्री आभा, बिहार में कक्षा दो की शिक्षिका हैं।

एक दिन मैं बाहर बैठकर खाना खा रही थी कि तभी मैंने छात्र–छात्राओं को ऊंची आवाज़ में बहस करते हुए सुना। मैंने दखल देने के बजाय, ध्यान से सुनने का फैसला किया। चार छात्र एक कविता के बारे में बहस कर रहे थे, जो मैंने उन्हें उस दिन सुबह पढ़कर सुनाई थी। जब मैं कविता पढ़ रही थी, तो कक्षा ने चुपचाप वह कविता सुनी थी। इसलिए मैंने यह मान

लिया था कि सब लोग उसे समझ गए हैं। लेकिन जब मैंने अपने छात्र–छात्राओं को बहस करते हुए सुना, तब मुझे अहसास हुआ कि उनमें से ज़्यादातर ने उसे बिलकुल ही गलत अर्थ में समझा था। कविता के मुख्य शब्दों के लिए उनके द्वारा की गई अलग–अलग व्याख्या को सुनकर मुझे यह बात पता चली।

मैंने अगले दिन उन्हें यह कविता फिर से सुनाने और इसके बारे में उनकी समझ को फिर से जानना तय किया। इस घटना ने मुझे सिखाया कि जब हम पाठ्यपुस्तक-आधारित अन्य पाठ पढ़ते हैं, तो मुझे इस बात को जाँचने के लिए ज्यादा समय देना चाहिए कि क्या कोई अपरिचित शब्दावली है और यदि ऐसा है, तो उसे ध्यानपूर्वक समझाना चाहिए। मैं उसके बाद से नियमित रूप से ऐसा कर रही हूँ और मैंने इसके फायदे भी देखे हैं।

श्रीमती सरोज बिहार में कक्षा पाँच की शिक्षिका हैं।

मैं अपने छात्र–छात्राओं के लेखन कार्य में उनसे जिन बातों की उम्मीद करती थी, वे बिंदु मैं उन्हें हूबहू बताती थी। इससे उनके टेक्स्ट एक समान हो जाते थे।

एक दिन सुबह कक्षा से पहले, मैंने कई छात्र–छात्राओं को आपस में बातें करते हुए सुना। मुझे अचंभा हुआ कि उन कुछ मिनटों में ही उन्होंने कई तरह के विषयों पर चर्चा की, उन्हें समझाया, प्रश्न पूछे, तर्क दिए और अनुमान लगाया। उनके पास कई रोचक विचार थे।

उनकी बातें सुनने के परिणामस्वरूप मुझे अहसास हुआ कि यदि मैं अपने छात्र–छात्राओं को उनके मौखिक भाषा संसाधनों, अनुभवों और रुचियों का इस तरह उपयोग करने दूँ, तो वे और भी ज्यादा रचनात्मक और सार्थक रूप से लिख सकेंगे।

अब मैं अपने छात्र–छात्राओं को चार या पाँच के समूहों में रखती हूँ और उन्हें चर्चा करने के लिए एक विषय देती हूँ व इसके बाद उन्हें एक व्यक्तिगत लेखन असाइनमेंट के लिए आमंत्रित करती हूँ। अभी तक, उन्होंने विद्यालय के बाहर वाली चाय की दुकान, एक स्थानीय त्यौहार, हाल ही में हुए एक खेल आयोजन, और आस-पास के पेड़ों जैसे विषयों के बारे में बात की है और लिखा है। कभी-कभी मैं अपने छात्र–छात्राओं को विद्यालय के परिसर में भेजती हूँ और उनसे कहती हूँ कि वे वस्तुओं का अवलोकन करें, आपस में चर्चा करें और फिर उनके बारे में लिखें।

अंतिम गतिविधि में, आप एक समूह गतिविधि आज़माएंगे, जिसमें बोलना और लिखना शामिल होगा। मुख्य संसाधन 'समूह कार्य का उपयोग करना' आपके लिए उपयोगी हो सकता है।

गतिविधि 5: लेखन की तैयारी करने के लिए समूह बातचीत का उपयोग करना

मार्गदर्शक के रूप में श्रीमती सरोज के केस स्टडी का उपयोग करके, एक पाठ तैयार करें, जिसमें आप अपने छात्र–छात्राओं को किसी विषय पर चर्चा करने और फिर उसके बारे में अकेले-अकेले लिखने के लिए आमंत्रित करेंगे।

- अपने वर्गकक्ष को चार, पाँच या छः के समूहों में बाँटें।
- प्रत्येक समूह को चर्चा करने के लिए एक विषय दें। यह आपके छात्र–छात्राओं की उम्र और रुचियों पर निर्भर होगा। आप प्रेरणा के लिए प्रत्येक समूह को एक चित्र या अखबार की क्लिपिंग दे सकते हैं।
- दो या तीन छात्र–छात्राओं के साथ इस बात का नमूना दिखाएँ कि उन्हें किस तरह आपस में बात करनी चाहिए, उन्हें यह प्रदर्शित करके बताएँ कि उपयोगी खोजी प्रश्न किस तरह पूछे जाते हैं और उनके सहपाठियों के उत्तरों को किस तरह आदरपूर्वक सुनना चाहिए।
- वर्गकक्ष का चक्कर लगाएँ और यदि आवश्यक हो, तो समूहों की मदद करें। इस अवसर का उपयोग करके अपने छात्र–छात्राओं के व्यवहार, भाषा में उनकी महारत और संबंधित विषय की उनकी समझ का अवलोकन करें।
- चर्चा सत्र के बाद, अपने छात्र–छात्राओं से कहें कि उन्होंने जिस विषय पर चर्चा की है, वे उस पर एक संक्षिप्त निबंध लिखें।
- कभी-कभी आप अपने छात्र–छात्राओं के निबंधों को रुचि के लिए अन्य सदस्यों में वितरित भी कर सकते हैं।
- अंत में, आप अपने छात्र–छात्राओं के लेखन के आपके मूल्यांकन के आधार पर आगे के सीखने की योजना बना सकते हैं।

सारांश

इस इकाई में आपको ऐसे अवसर तैयार करने के बारे में कुछ विचार दिए गए, जिनके द्वार आपके छात्र–छात्रा वर्गकक्ष में उनके सीखने में सहायता के लिए एक दूसरे से बात कर सकते हैं और सुन सकते हैं। इसमें यह दर्शाया गया है कि विषय के बारे में और भाषा कौशल के बारे में छात्र–छात्राओं की समझ और प्रगति की जानकारी आपको देने में छात्र–छात्राओं की चर्चा किस तरह मूल्यवान हो सकती है। ऐसी जानकारी आपके कक्षा अभ्यास और सीखने की योजना दोनों में योगदान कर सकती है। अपने छात्र–छात्राओं की बातचीत को सुनकर, आप सीखने की योजना इसके अनुरूप बना सकते हैं कि आप अपने छात्र–छात्राओं को क्या सिखाना चाहते हैं और उनकी सोच को किस प्रकार विकसित करना चाहते हैं, ताकि उनकी उपलब्धि में सुधार हो सके।

संसाधन

संसाधन 1: सीखने के लिए बातचीत

सीखने के लिए बातचीत क्यों जरूरी है

बातचीत मानव विकास का हिस्सा है, जो सोचने-विचारने, सीखने और विश्व का बोध प्राप्त करने में हमारी मदद करती है। लोग भाषा का इस्तेमाल तार्किक क्षमता, ज्ञान और समझ को विकसित करने के लिए औज़ार के रूप में करते हैं। अत:, छात्र–छात्राओं को उनके शिक्षण अनुभवों के भाग के रूप में बात करने के लिए प्रोत्साहित करने का अर्थ होगा उनकी शैक्षणिक प्रगति का बढ़ना। सीखे गए विचारों के बारे में बात करने का अर्थ होता है:

- उन विचारों को परखा गया है
- तार्किक क्षमता विकसित और सुव्यवस्थित है
- जिससे छात्र–छात्रा अधिक सीखते हैं।

किसी कक्षा में रटा-रटाया दोहराने से लेकर उच्च श्रेणी की चर्चा तक छात्र वार्तालाप के विभिन्न तरीके होते हैं।

पारंपरिक तौर पर, शिक्षक/शिक्षिका की बातचीत का दबदबा होता था और वह छात्र–छात्राओं की बातचीत या छात्र–छात्राओं के ज्ञान के मुकाबले अधिक मूल्यवान समझी जाती थी। तथापि, पढ़ाई के लिए बातचीत में पाठों का नियोजन शामिल होता है ताकि छात्र इस ढंग से अधिक बात करें और अधिक सीखें कि शिक्षक छात्र–छात्राओं के पहले के अनुभव के साथ संबंध कायम करें। यह किसी शिक्षक/शिक्षिका और उसके छात्र–छात्राओं के बीच प्रश्न और उत्तर सत्र से कहीं अधिक होता है क्योंकि इसमें छात्र की अपनी भाषा, विचारों और रुचियों को ज्यादा समय दिया जाता है। हम में से अधिकांश कठिन मुद्दे के बारे में या किसी बात का पता करने के लिए किसी से बात करना चाहते हैं, और अध्यापक बेहद सुनियोजित गतिविधियों से इस सहज-प्रवृत्ति को बढ़ा सकते हैं।

कक्षा में शिक्षण गतिविधियों के लिए बातचीत की योजना बनाना

शिक्षण की गतिविधियों के लिए बातचीत की योजना बनाना महज साक्षरता और शब्दावली के लिए नहीं है, यह गणित एवं विज्ञान के काम तथा अन्य विषयों के नियोजन का हिस्सा भी है। इसे समूची कक्षा में, जोड़ी कार्य या सामूहिक कार्य में, आउटडोर गतिविधियों में, भूमिका पर आधारित गतिविधियों में, लेखन, वाचन, प्रायोगिक छानबीन और रचनात्मक कार्य में योजनाबद्ध किया जा सकता है।

यहां तक कि साक्षरता और गणना के सीमित कौशलों वाले नन्हें छात्र भी उच्चतर श्रेणी के चिंतन कौशलों का प्रदर्शन कर सकते हैं, बशर्ते कि उन्हें दिया जाने वाला कार्य उनके पहले के अनुभव पर आधारित और आनंदप्रद हो। उदाहरण के लिए, छात्र तस्वीरों, आरेखणों या वास्तविक वस्तुओं से किसी कहानी, पशु या आकृति के बारे में पूर्वानुमान लगा सकते हैं। छात्र भूमिका निभाते समय कठपुतली या पात्र की समस्याओं के बारे में सुझावों और संभावित समाधानों को सूचीबद्ध कर सकते हैं।

जो कुछ आप छात्र–छात्राओं को सिखाना चाहते हैं, उसके इर्दगिर्द पाठ की योजना बनायें और इस बारे में सोचें, और साथ ही इस बारे में भी कि आप किस प्रकार की बातचीत को छात्र–छात्राओं में विकसित होते देखना चाहते हैं। कुछ प्रकार की बातचीत अन्वेषी होती है, उदाहरण के लिए: 'इसके बाद क्या होगा?', 'क्या हमने इसे पहले देखा है?', 'यह क्या हो सकता है?' या 'आप ऐसा क्यों सोचते हैं कि वह यह है?' कुछ अन्य प्रकार की वार्ताएं ज्यादा विश्लेषणात्मक होती हैं, उदाहरण के लिए विचारों, साक्ष्य या सुझावों का आकलन करना।

इसे रोचक, मज़ेदार और सभी छात्र–छात्राओं के लिए संवाद में भाग लेना संभव बनाने की कोशिश करें। छात्र–छात्राओं को उपहास का पात्र बनने या गलत होने के भय के बिना दृष्टिकोणों को व्यक्त करने और विचारों का पता लगाने में सहज होने और सुरक्षित महसूस करने की जरूरत होती है।

छात्र–छात्राओं की बातचीत को आगे बढ़ाएं

शिक्षण के लिए वार्ता शिक्षक–शिक्षिकाओं को निम्न अवसर प्रदान करती है:

- छात्र जो कहते हैं उसे सुनना
- छात्र–छात्राओं के विचारों की प्रशंसा करना और उस पर आगे काम करना
- इसे आगे ले जाने के लिए छात्र–छात्राओं को प्रोत्साहित करना।

सभी उत्तरों को लिखना या उनका औपचारिक आकलन नहीं करना होता है, क्योंकि वार्ता के जरिये विचारों को विकसित करना शिक्षण का महत्वपूर्ण हिस्सा है। आपको उनके शिक्षण को प्रासंगिक बनाने के लिए उनके अनुभवों और विचारों का

यथासंभव प्रयोग करना चाहिए। सर्वश्रेष्ठ छात्र वार्ता अन्वेषी होती है, जिसका अर्थ होता है कि छात्र–छात्रा एक दूसरे के विचारों की जांच करते हैं और चुनौती पेश करते हैं ताकि वे अपने प्रत्युत्तरों को लेकर विश्वस्त हो सकें। एक साथ बातचीत करने वाले समूहों को किसी के भी द्वारा दिए गए उत्तर को स्वीकार करने के लिए प्रोत्साहित नहीं किया जाना चाहिए। आप समूची कक्षा की सेटिंग में 'क्यों?', 'आपने उसका निर्णय क्यों किया?' या 'क्या आपको उस हल में कोई समस्या नजर आती है?' जैसे जांच वाले प्रश्नों के अपने प्रयोग के माध्यम से चुनौतीपूर्ण विचारशीलता को तैयार कर सकते हैं। आप छात्र समूहों को सुनते हुए वर्गकक्ष में घूम सकते हैं और ऐसे प्रश्न पूछकर उनकी विचारशीलता को बढ़ा सकते हैं।

अगर छात्र–छात्राओं की वार्ता, विचारों और अनुभवों की कद्र और सराहना की जाती है तो वे प्रोत्साहित होंगे। बातचीत करने के दौरान अपने व्यवहार, सावधानी से सुनने, एक दूसरे से प्रश्न पूछने, और बाधा न डालना सीखने के लिए अपने छात्र–छात्राओं की प्रशंसा करें। कक्षा में कमजोर बच्चों के बारे में सावधान रहें और उन्हें भी शामिल किया जाना सुनिश्चित करने के तरीकों पर विचार करें। कामकाज के ऐसे तरीकों को स्थापित करने में थोड़ा समय लग सकता है, जो सभी छात्र–छात्राओं को पूरी तरह से भाग लेने की सुविधा प्रदान करते हों।

छात्र–छात्राओं को खुद से प्रश्न पूछने के लिए प्रोत्साहित करें

अपनी कक्षा में ऐसा वातावरण तैयार करें जहां अच्छे चुनौतीपूर्ण प्रश्न पूछे जाते हैं और जहां छात्र–छात्राओं के विचारों को सम्मान दिया जाता है और उऩकी प्रशंसा की जाती है। छात्र प्रश्न नहीं पूछेंगे अगर उन्हें उनके साथ किए जाने वाले व्यवहार को लेकर भय होगा या अगर उन्हें लगेगा कि उनके विचारों का मान नहीं किया जाएगा। छात्र–छात्राओं को प्रश्न पूछने के लिए आमंत्रित करना उनको जिज्ञासा दर्शाने के लिए प्रोत्साहित करता है, उनसे अपने शिक्षण के बार में अलग ढंग से विचार करने के लिए कहता है और उनके नजरिए को समझने में आपकी सहायता करता है।

आप कुछ नियमित समूह या जोड़े में कार्य करने, या शायद 'छात्र–छात्राओं के प्रश्न पूछने का समय' जैसी कोई योजना बना सकते हैं ताकि छात्र प्रश्न पूछ सकें या स्पष्टीकरण मांग सकें। आप:

- अपने पाठ के एक भाग को 'अगर आपका प्रश्न है तो हाथ उठाएं' नाम रख सकते हैं।
- किसी छात्र को हॉट-सीट पर बैठा सकते हैं और दूसरे छात्र–छात्राओं को उस छात्र से प्रश्न पूछने के लिए प्रोत्साहित कर सकते हैं जैसे कि वे पात्र हों, उदाहरणत: पाइथागोरस या मीराबाई
- जोड़ों में या छोटे समूहों में 'मुझे और अधिक बताएं' खेल खेल सकते हैं
- मूल पूछताछ का अभ्यास करने के लिए छात्र–छात्राओं को कौन/क्या/कहां/कब/क्यों वाले प्रश्न ग्रिड दे सकते हैं
- छात्र–छात्राओं को कुछ डेटा (जैसे कि विश्व डेटा बैंक से उपलब्ध डेटा, उदाहरणत: पूर्णकालिक शिक्षा में बच्चों की प्रतिशतता या भिन्न देशों में स्तनपान की विशेष दरें) दे सकते हैं, और उनसे उन प्रश्नों के बारे में सोचने के लिए कह सकते हैं जो आप इस डेटा के बारे में पूछ सकते हैं
- छात्र–छात्राओं के सप्ताह भर के प्रश्नों को सूचीबद्ध करते हुए प्रश्न दीवार डिज़ाइन कर सकते हैं।

जब छात्र प्रश्न पूछने और उन्हें मिलने वाले प्रश्नों के उत्तर देने के लिए मुक्त होते हैं तो उस समय आपको रुचि और विचारशीलता के स्तर को देखकर हैरानी होगी। जब छात्र–छात्रा अधिक स्पष्टता और सटीकता से संवाद करना सीख जाते हैं, तो वे न केवल अपनी मौखिक और लिखित शब्दावलियां बढ़ाते हैं, अपितु उनमें नया ज्ञान और कौशल भी विकसित होता है।

संसाधन 2: सोच को बढ़ावा देने के लिए प्रश्न पूछना

शिक्षक/शिक्षिका हमेशा अपने छात्र–छात्राओं से सवाल पूछते रहते हैं; सवालों का अर्थ ये होता है कि शिक्षक सीखने और सीखते रहने में अपने छात्र–छात्राओं की मदद कर सकते हैं। एक अध्ययन के अनुसार औसतन, एक शिक्षक या शिक्षिका अपने समय का एक-तिहाई हिस्सा छात्र–छात्राओं से सवाल पूछने में खर्च करता/करती है (हेस्टिंग्स, 2003)। पूछे गए प्रश्नों

में से, 60 प्रतिशत में तथ्यों को दोहराया गया था और 20 प्रतिशत प्रक्रियात्मक थे (हैती, 2012), जिनमें से ज्यादातर के उत्तर सही या गलत में थे। लेकिन क्या सिर्फ सही या गलत में उत्तर वाले सवाल पूछने से सीखने को प्रोत्साहन मिलता है?

छात्र–छात्राओं से कई अलग–अलग तरह के सवाल पूछे जा सकते हैं। शिक्षक/शिक्षिका किस तरह के उत्तर और परिणाम पाना चाहते हैं, उनसे पता चलता है कि शिक्षक को किस तरह के सवाल पूछने चाहिए। शिक्षक/शिक्षिका आमतौर पर छात्र–छात्राओं से सवाल पूछते हैं, ताकि वे:

- जब कोई नया विषय या सामग्री प्रस्तुत की जाती है, तो वे छात्र–छात्राओं को इसे समझने के लिए मार्गदर्शन कर सकें
- बेहतर ढंग से सोचने के लिए छात्र–छात्राओं को प्रोत्साहित कर सकें
- कोई त्रुटि दूर कर सकें
- छात्र–छात्राओं को प्रोत्साहित कर सकें
- समझ को जाँच सकें।

प्रश्नों का उपयोग आमतौर पर यह देखने के लिए किया जाता है कि छात्र क्या जानते हैं, इसलिए यह उनकी प्रगति का आंकलन करने के लिए महत्वपूर्ण है। प्रश्नों का उपयोग प्रेरणा देने, छात्र–छात्राओं के सोचने के कौशल को बढ़ाने और जिज्ञासु मन विकसित करने में भी किया जा सकता है। उन्हें मोटे तौर पर दो श्रेणियों में बाँटा जा सकता है:

- **निचले स्तर के प्रश्न**, जिनसे कि तथ्यों का स्मरण और पहले सिखाया गया ज्ञान शामिल होता है, प्रायः बंद सिरे के प्रश्नों (हां या नहीं में उत्तर) से संबद्ध होते हैं।
- **उच्च स्तर के प्रश्न**, जिनके लिए ज्यादा सोचने की ज़रुरत होती है। उनके लिए छात्र–छात्राओं को पहले किसी उत्तर से सीखी गई जानकारी को एक साथ रखने या तार्किक रूप से किसी दलील का समर्थन करने की ज़रुरत पड़ सकती है। उच्च स्तर के प्रश्न प्रायः ज्यादा खुले सिरों वाले होते हैं।

खुले सवाल छात्र–छात्राओं को पाठ्यपुस्तक पर आधारित, यथाशब्द जवाबों से परे सोचने को प्रोत्साहित करते हैं, इसलिए उत्तरों की श्रेणी खींच निकालते हैं। इनसे शिक्षकों/शिक्षिकाओं को भी सामग्री के बारे में छात्र की समझ का आंकलन करने में मदद मिलती है।

छात्र–छात्राओं को उत्तर देने के लिए प्रोत्साहित करना

कई शिक्षक/शिक्षिका एक सेकंड से भी कम समय में अपने प्रश्न का उत्तर चाहते हैं और इसलिए अक्सर वे खुद ही प्रश्न का उत्तर दे देते हैं या प्रश्न को दूसरी तरह से दोहराते हैं (हेस्टिंग्स, 2003)। छात्र–छात्राओं को केवल प्रतिक्रिया देने का समय मिलता है – उनके पास सोचने का समय ही नहीं होता! अगर आप उत्तर चाहने से पहले कुछ सेकंड इंतजार करते हैं तो छात्र को सोचने के लिए समय मिल जाएगा। इसका छात्र–छात्राओं की उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। प्रश्न को प्रस्तुत करने के बाद इंतजार करने से निम्नांकित में वृद्धि होती है:

- छात्र–छात्राओं के उत्तरों की लंबाई
- उत्तर देने वाले छात्र–छात्राओं की संख्या
- छात्र–छात्राओं के प्रश्नों की बारंबारता
- कम सक्षम छात्र–छात्राओं के पास से उत्तरों की संख्या
- छात्र–छात्राओं के बीच सकारात्मक संवाद।

आपका प्रतिक्रिया या उत्तर महत्वपूर्ण है

आप दिए गए सभी उत्तरों को जितने सकारात्मक ढंग से स्वीकार करते हैं, छात्र भी उतना ही ज्यादा सोचना और कोशिश करना जारी रखेंगे। यह सुनिश्चित करने के कई तरीके हैं कि गलत उत्तरों और गलत धारणाओं को सुधार दिया जाए, और

यदि एक छात्र के मन में कोई गलत विचार है, तो आप निश्चित रूप से यह मान सकते हैं कि कई अन्य छात्र–छात्राओं के मन में भी वही गलत धारणा होगी। आप निम्नलिखित का प्रयास कर सकते हैं:

- उत्तरों के उन हिस्सों को चुन सकते हैं, जो सही हैं और एक सहायक ढंग से छात्र से अपने उत्तर के बारे में थोड़ा और सोचने के लिए कह सकते हैं। यह ज्यादा सक्रिय भागीदारी को प्रोत्साहित करता है और आपके छात्र–छात्राओं की अपनी गलतियों से सीखने में मदद करता है। निम्नलिखित टिप्पणी यह दर्शाती है कि आप ज्यादा मददगार ढंग से किस प्रकार से गलत उत्तर पर प्रतिक्रिया दे सकते हैं: 'आप वाष्पीकरण से बनते बादलों के बारे में सही थे लेकिन मुझे लगता है कि हमें बारिश के बारे में आपने जो कहा है उसके बारे में थोड़ा और पता लगाने की जरूरत है। क्या आपमें से कोई और इस बारे में कुछ बता सकता है?'
- छात्र–छात्राओं से मिलने वाले सभी उत्तर ब्लैकबोर्ड पर लिखें, और छात्र–छात्राओं से पूछें कि वे इनके बारे में क्या सोचते हैं। उनके अनुसार कौन-से उत्तर सही हैं? कोई अन्य उत्तर देने का कारण क्या रहा होगा? इससे आपको यह समझने का एक मौक़ा मिलता है कि आपके छात्र किस तरीके से सोच रहे हैं और आपके छात्र–छात्राओं को भी एक मित्रवत तरीके से अपनी गलत धारणाओं को सुधारने का अवसर मिलता है।

सभी उत्तरों को ध्यान से सुनकर और आगे समझाने के लिए छात्र–छात्राओं को प्रेरित करके उन्हें महत्व दें। उत्तर चाहे सही हो या गलत, लेकिन यदि आप छात्र–छात्राओं से अपने उत्तरों को विस्तार में समझाने को कहते हैं, तो अक्सर छात्र अपनी गलतियाँ खुद ही सुधार लेंगे, आप एक विचारशील कक्षा का विकास करेंगे और आपको वास्तव में पता चलेगा कि आपके छात्र कितना सीख गए हैं और अब किस तरह आगे बढ़ना चाहिए। यदि गलत उत्तर देने पर अपमान या सज़ा मिलती है, तो दोबारा शर्मिंदगी या डांट के डर से आपके छात्र कोशिश करना ही छोड़ देंगे।

उत्तरों की गुणवत्ता को बेहतर बनाना

यह महत्वपूर्ण है कि आप प्रश्नों का एक ऐसा क्रम अपनाने की कोशिश करें, जो सही उत्तर पर ख़त्म न होता हो। सही उत्तरों के बदले फॉलो-अप प्रश्न पूछने चाहिए, जो छात्र–छात्राओं का ज्ञान बढ़ता है और उन्हें शिक्षक/शिक्षिका के साथ संलग्न होने का मौका देते है। यह आप इसके लिए पूछकर कर सकते हैं:

- एक *कैसे* या एक *क्यों*
- उत्तर देने का एक और तरीका
- एक बेहतर शब्द
- किसी उत्तर को सही साबित करने के लिए प्रमाण
- संबंधित कौशल का एकीकरण
- उसी कौशल या तर्क का किसी नई स्थिति में अनुप्रयोग।

छात्र–छात्राओं की ज्यादा गहराई में जाकर सोचने में मदद करना और उनके उत्तरों की गुणवत्ता को बेहतर बनाना आपकी भूमिका का बहुत ही महत्वपूर्ण हिस्सा है। निम्नलिखित कौशल अधिक उपलब्धि हासिल करने में छात्र–छात्राओं की मदद करते हैं:

- **प्रोत्साहन** के लिए छात्र–छात्राओं को उचित संकेत देने की ज़रुरत पड़ती है – ऐसे संकेत जिनसे छात्र–छात्राओं को उनके प्रश्नों को विकसित करने और सुधार में मदद मिलती हो। उत्तर में सही क्या है, आप पहले इसे चुनकर इसके बाद जानकारी, आगे के प्रश्न तथा अन्य संकेत दे सकते हैं। ('तो अगर आप कागज के अपने हवाई जहाज के अंतिम सिरे पर वजन रखते हैं तो क्या होगा?')

- **जांच-पड़ताल** अधिक जानकारी पाने की कोशिश करने, एक अव्यवस्थित उत्तर को या आंशिक रूप से सही उत्तर को सुधारने की कोशिश में छात्र जो कहना चाहते हैं, उसे स्पष्ट करने में उनकी मदद करने से संबंधित है। ('तो इस सबका जो अर्थ है उसके बारे में आप मुझे और क्या बता सकते हैं?')
- **फिर से ध्यान केंद्रित करना** सही उत्तरों के आधार पर छात्र–छात्राओं के ज्ञान को उस ज्ञान से जोड़ने से संबंधित होता है, जो उन्होंने पहले सीखा है। यह उनकी समझ को विकसित करता है। ('आपकी बात सही है, लेकिन पिछले सप्ताह हमने अपने स्थानीय पर्यावरण विषय के बारे में जो पढ़ रहे थे, यह उससे किस प्रकार संबंधित है?')
- **प्रश्नों को अनुक्रित करने** का अर्थ है ऐसे क्रम में प्रश्न पूछना, जिन्हें सोच का विस्तार करने हेतु बनाया गया है। प्रश्नों के द्वारा छात्र–छात्राओं को सारांश बनाने, तुलना करने, समझाने और विश्लेषण करने की प्रेरणा मिलनी चाहिए। ऐसे प्रश्न तैयार करें, जिनसे छात्र–छात्राओं को सोचने की प्रेरणा मिले, लेकिन उन्हें इतनी ज्यादा भी चुनौती न दें कि प्रश्न का अर्थ ही खो जाए। ('स्पष्ट करें कि आप अपनी पहले की समस्या से किस प्रकार उबरे। उससे क्या फर्क पड़ा? आपको क्या लगता है आगे आपको किस चीज का सामना करने की जरूरत पड़ेगी?')
- **सुनने** से आप न केवल अपेक्षित उत्तर पर गौर करने में समर्थ होते हैं, बल्कि इससे आप असाधारण या नवोन्मेषी उत्तरों के प्रति सतर्क भी होते हैं, जिसकी हो सकता है कि आपको अपेक्षा न रही हो। इससे यह भी दिखाई देता है कि आप छात्र–छात्राओं के विचारों को महत्व देते हैं और इसलिए इस बात की ज्यादा संभावना होती है कि वे सुविचारित उत्तर देंगे। इस तरह के उत्तर भ्रांतियों को चिह्नांकित कर सकते हैं, जिन्हें ठीक करने की जरूरत होती है अथवा वे एक नयी पहुंच दर्शा सकते हैं, जिन पर आपने विचार नहीं किया हो। ('मैंने इसके बारे में सोचा नहीं था। आप इस तरह से क्यों सोचते हैं इसके बारे में मुझे और जानकारी दें।')

एक शिक्षक/शिक्षिका के रूप में, आपको ऐसे प्रश्न पूछने चाहिए जो प्रेरित करने वाले और चुनौतीपूर्ण हों, ताकि आप अपने छात्र–छात्राओं से रोचक और आविष्कारक उत्तर पा सकें। आपको उन्हें सोचने का समय देना चाहिए और आप सचमुच यह देखकर चकित रह जाएंगे कि आपके छात्र कितना कुछ जानते हैं और आप सीखने में उनकी प्रगति में कितनी अच्छी तरह मदद कर सकते हैं।

याद रखें कि प्रश्न यह जानने के लिए नहीं पूछे जाते कि शिक्षक/शिक्षिका क्या जानते हैं, बल्कि वे यह जानने के लिए पूछे जाते हैं कि छात्र क्या जानते हैं। यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि आपको कभी भी अपने खुद के प्रश्नों का जवाब नहीं देना चाहिए! आखिरकार यदि छात्र–छात्राओं को यह पता ही हो कि वे आगे कुछ सेकंड तक चुप रहते हैं, तो आप खुद ही उत्तर दे देंगे, तो फिर उन्हें उत्तर देने का प्रोत्साहन कैसे मिलेगा?

अतिरिक्त संसाधन

- A selection of multilingual activities: http://mlenetwork.org/content/activities-early-grades-mother-tongue-l1-based-multilingual-education-programs
- The Rishi Valley rural education programme has published a number of different resources, some of which include pictures, poems in state and local languages: http://rishivalley.org/publications/list_of_titles.htm
- Some stories from Rishi Valley told in Hindi with downloadable written version and worksheets: http://rishivalley.org/rvite/Stories%20with%20Worksheets.htm
- Articles from Rishi Valley in Hindi and English about teaching Hindi to children: http://rishivalley.org/rvite/articles_teaching_hindi_children.htm

संदर्भ/संदर्भग्रंथ सूची

Barnes, D. (1992) *From Communication to Curriculum*, 2nd edn. Portsmouth, NH: Boynton/Cook-Heinemann.

Barnes, D. (2008) 'Exploratory talk for learning' in Mercer, N. and Hodgkinson, S. (eds) *Exploring Talk in School*. London: Sage Publications, pp.1–15.

Fisher, D., Frey, N. and Rothenberg, C. (2008) 'Procedures for classroom talk', Chapter 5 in *Content Area Conversations: How to Plan Discussion-Based Lessons for Diverse Language Learners*. Alexandria, VA: Association for Supervision and Curriculum Development. Available from: http://www.ascd.org/publications/books/108035/chapters/Procedures-for-Classroom-Talk.aspx (accessed 28 October 2014).

Genishi, C. (undated) 'Young children's oral language development' (online), Reading Rockets. Available from: http://www.readingrockets.org/article/383 (accessed 28 October 2014).

Hastings, S. (2003) 'Questioning', *TES Newspaper*, 4 July. Available from: http://www.tes.co.uk/article.aspx?storycode=381755 (accessed 22 September 2014).

Hattie, J. (2012) *Visible Learning for Teachers: Maximising the Impact on Learning*. Abingdon: Routledge.

Higgins, S. (2001a) 'Developing thinking skills in the primary classroom' (online), paper presented at the Register of Primary Research Seminar Conference 'Raising Achievement: Developing Thinking Skills', Education-Line, 27 October. Available from: http://www.leeds.ac.uk/educol/documents/140953.htm (accessed 28 October 2014).

Higgins, S. (2001b) *Thinking Through Primary Teaching*. Cambridge, UK: Chris Kington Publishing.

McCandlish S. (2012) 'Taking a "slice" of the oral language pie: an approach for developing oral language in schools' (online). Available from: http://www.decd.sa.gov.au/northernadelaide/files/links/Taking_a_slice_of_Oral_Lan.pdf (accessed 28 October 2014).

Mercer, N. (1995) *The Guided Construction of Knowledge: Talk Amongst Teachers and Learners*. Clevedon: Multilingual Matters.

Neaum, S. (2012) *Language and Literacy for the Early Years*. London: Sage.

Prince, A.W. (undated) 'Promoting oral language development in young children' (online), Super Duper Publications. Available from: http://www.superduperinc.com/handouts/pdf/120_oral_language_development.pdf (accessed 28 October 2014).

Roskos, K.A., Tabors, P.O. and, Lenhart, L. A. (2009) *Oral Language and Early Literacy in Preschool: Talking, Reading, and Writing*, 2nd edn. International Reading Association. Available from: http://www.reading.org/Libraries/books/bk693-1-Roskos.pdf (accessed 28 October 2014).

Vygotsky, L.S. (1962) *Thought and Language*. Cambridge, MA: MIT Press. For a brief summary of Vygotsky's ideas on thought and language and the differences between his and Piaget's ideas, see: http://www.simplypsychology.org/vygotsky.html (accessed 28 October 2014).

Wells, G. (1993) 'Reevaluating the IRF sequence', *Linguistics and Education*, no. 5, pp. 1–37.

अभिस्वीकृतियाँ

तृतीय पक्षों की सामग्रियों और अन्यथा कथित को छोड़कर, यह सामग्री क्रिएटिव कॉमन्स एट्रिब्यूशन-शेयरएलाइक लाइसेंस के अंतर्गत उपलब्ध कराई गई है (http://creativecommons.org/licenses/by-sa/3.0/)। नीचे दी गई सामग्री मालिकाना हक की है तथा इस परियोजना के लिए लाइसेंस के अंतर्गत ही उपयोग की गई है, तथा इसका Creative Commons लाइसेंस से कोई वास्ता नहीं है। इसका अर्थ यह है कि इस सामग्री का उपयोग अननुकूलित रूप से केवल TESS-India परियोजना के भीतर किया जा सकता है और किसी भी बाद के OER संस्करणों में नहीं। इसमें TESS-India, OU और UKAID लोगो का उपयोग भी शामिल है।

इस इकाई में सामग्री को पुनः प्रस्तुत करने की अनुमति के लिए निम्न स्रोतों का कृतज्ञतापूर्ण आभार:

चित्र 1: बायाँ, 'My Village' और दायाँ, 'Agriculture', © स्थानीय कलाकार – अज्ञात (Figure 1: left, 'My Village' and right, 'Agriculture, © local artists – unidentified)।

चित्र 2: एनसीईआरटी, रिमझिम, हदी, कक्षा 1, अध्याय 2: http://ncert.nic.in/NCERTS/textbook/textbook.htm?ahhn1=2-23 (Figure 2: NCERT, Rimjhim, Hindi, Class 1, Chapter 2: http://ncert.nic.in/NCERTS/textbook/textbook.htm?ahhn1=2-23)।

चित्र 3: श्रेय: विद्या भवन शिक्षा संसाधन केंद्र, उदयपुर (Figure 2: Credit: Vidya Bhawan Education Resource Centre, Udaipur.)।

कॉपीराइट के स्वामियों से संपर्क करने का हर प्रयास किया गया है। यदि किसी को अनजाने में अनदेखा कर दिया गया है, तो पहला अवसर मिलते ही प्रकाशकों को आवश्यक व्यवस्थाएं करने में हर्ष होगा।

वीडियो (वीडियो स्टिल्स सहित): भारत भर के उन शिक्षक प्रशिक्षकों, प्रधानाध्यापकों, शिक्षकों और छात्र–छात्राओं के प्रति आभार प्रकट किया जाता है, जिन्होंने उत्पादनों में दि ओपन यूनिवर्सिटी के साथ काम किया है।